

छठ के शुभ मौके पर हर की पौड़ी में माननीय केंद्रीय कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री श्री राधा मोहन सिंह का सम्बोधन

भाइयों और बहनों, हर की पौड़ी, हरिद्वार के इस पावन घाट पर मैं आप सभी को छठ की शुभकामनाएं देता हूं।

छठ पूजा कार्तिक शुक्ल की षष्ठी तिथि को मनाये जाने वाला एक हिन्दू त्यौहार है जो प्रति वर्ष देश में बहुत ही उत्साह के साथ मनाया जाता है। यह एक बहुत ही प्राचीन त्यौहार है जिसको डाला छठ, डाला पूजा, सूर्य षष्ठी भी कहा जाता है। इसमें भगवान सूर्य की आराधना की जाती है। साथ ही लोग सूर्य से अपने परिवार के लिए सुख-शांति और सफलता की कामना करते हैं।

छठ पर्व के पीछे कई वैज्ञानिक आधार छिपे हुए हैं। दसअसल षष्ठी तिथि (छठ) एक विशेष खगोलीय घटना है। इस समय सूर्य की पराबैगनी किरणों पृथ्वी की सतह पर सामान्य से अधिक मात्रा में एकत्र हो जाती हैं। इसके कुप्रभावों से मानव की रक्षा करने का सामर्थ्य इस परंपरा में है। इस पर्व के अनुसार सूर्य (तारा) प्रकाश (पराबैगनी किरण) के हानिकारक प्रभाव से जीवों की रक्षा करता है।

सूर्य के प्रकाश के साथ उसकी पराबैगनी किरण भी पृथ्वी पर आती हैं। सूर्य का प्रकाश जब पृथ्वी पर पहुंचता है, तो पहले उसे वायुमंडल मिलता है। वायुमंडल में प्रवेश करने पर उसे सबसे पहले आयन मंडल मिलता है। पराबैगनी किरणों का उपयोग कर वायुमंडल अपने ऑक्सीजन तत्व को संश्लेषित कर उसे उसके एलोट्रोप ओजोन में बदल देता है। इस क्रिया द्वारा सूर्य की पराबैगनी किरणों का अधिकांश भाग पृथ्वी के वायुमंडल में ही अवशोषित हो जाता है।

छठ महापर्व को खेती से जुड़ा हुआ त्यौहार भी माना जाता है। कृषि विशेषज्ञों के मुताबिक छठ पूजा के लिए नई फसलों का प्रयोग अधिक हुआ करता है। इसलिये इसे नवान्न का पर्व भी कहा जाता है। नहाय खाय से लेकर अर्घ्य दिए जाने तक नई फसलों का ही प्रसाद बनता है। खरना में प्रसाद के रूप में जो खीर, पीठा और रोटी बनती है उसमें चावल, ईख से बना गुड़ और गेहूं की नई फसल इस्तेमाल की जाती है। इसके पीछे यह धारणा है कि जो फसल सीधे खेत से निकल कर आती है वह पूजा के लिए शुद्ध होती है। अर्घ्य दिए जाने के दिन भी जो फल, पकवान, ठेकुआ और लड्डुआ का इस्तेमाल किया जाता है उसमें भी नई फसलों का प्रयोग किया जाता है। जैसे चावल, गेहूं, अदरक, पानी फल सिंघाड़ा, हल्दी, सुथनी और केला। कृषि विशेषज्ञ बताते हैं कि आज के समय में मौसम की दगाबाजी के कारण छठ व्रतियों को कई नई फसलें नहीं मिल पाती हैं। इसलिए वे पिछले साल की फसलों का ही इस्तेमाल करते हैं पर फिर भी कोशिश यही रहती है कि नई फसलों का ही प्रयोग करें।

छठ पूजा का विधि-विधान व्रती के शरीर और मन को सौर ऊर्जा के अवशोषण के लिए तैयार करता है. बहुत कम ही लोगों को पता है कि छठ पूजा की इसी प्रक्रिया के जरिए प्राचीन भारत में ऋषि-मुनि बिना भोजन-पानी ग्रहण किए बिना कठोर तपस्या करने की ऊर्जा प्राप्त करते थे. छठ पूजा की विधि द्वारा ही वे भोजन-पानी से अप्रत्यक्ष तौर पर प्राप्त होने वाली ऊर्जा के बजाए सूर्य के संपर्क से सीधे ऊर्जा प्राप्त कर लेते थे।

उगते सूर्य को अर्घ्य देने के दौरान इसकी रोशनी के प्रभाव में आने से कोई चर्म रोग नहीं होता और इंसान निरोगी रहता है। इस पूजन का वैज्ञानिक पक्ष ये है कि इससे सेहत से जुड़ी समस्याएं परेशान नहीं करतीं. वैज्ञानिक रूप से देखें तो इस माह में सूर्य उपासना से हम अपनी ऊर्जा और स्वास्थ्य का स्तर बेहतर बनाए रख सकते हैं।

दीपावली के बाद सूर्यदेव का ताप पृथ्वी पर कम पहुंचता है. इसलिए व्रत के साथ सूर्य के ताप के माध्यम से ऊर्जा का संचय किया जाता है, ताकि शरीर सर्दी में स्वस्थ रहे। इसके अलावा सर्दी आने से शरीर में कई परिवर्तन भी होते हैं. खास तौर से पाचन तंत्र से संबंधित परिवर्तन. छठ पर्व का उपवास पाचन तंत्र के लिए लाभदायक होता है। इससे शरीर की आरोग्य क्षमता में वृद्धि होती है.

छठ में दिए जाने वाले अर्घ्य का भी विशेष महत्व है. सुबह, दोपहर और शाम तीन समय सूर्य देव विशेष रूप से प्रभावी होते हैं, सुबह के वक्त सूर्य की आराधना से सेहत बेहतर होती है।

छठ का पौराणिक महत्व भी है। छठ पूजा को हस्तिनापुर के द्रौपदी और पंच पांडव अपने दुखों के निवारण और अपने खोये हुए राज्य को दोबारा पाने के लिए किया करते थे। छठ पूजा को सबसे पहले शुरू सूर्य पुत्र कर्ण ने किया था। उनके शौर्य और पराक्रम जितना कहा जाये कम है। यह भी कहा जाता है कि महाभारत के समय उसने अंग देश(मुंगेर डिस्ट्रिक्ट -बिहार) पर राज किया था। छठ पूजा के दिन छठी मैया यानि सूर्य देव की पत्नी की भी पूजा भी की जाती है। वेदों में छठी मैया को उषा के नाम से जाना जाता है। उषा का अर्थ होता है दिन की पहली रोशनी। उनकी पूजा छठ के दिन मोक्ष की प्राप्ति और मुश्किलों के हल करने की कामना करने के लिए की जाती है। एक और इतिहास से जुड़ा कहानी यह है कि भगवान् श्री राम और माता सीता ने कार्तिक के महीने में 14 वर्ष के वनवास से वापास आने के लिए धन्यवाद देते हुए उपवास रखा था और सूर्यदेव की पूजा की थी।

चार दिन तक चलने वाले इस पर्व में प्रत्येक दिन का अपना एक महत्व है जो कि इस प्रकार है:-

चतुर्थी – पहल दिन (नहाय खाय), भक्त नदी में पवित्र स्नान करते हैं और वहां से कुछ पानी एक पात्र में अपने घर, अन्य सामग्री बनाने के लिए लेकर आते हैं। वे अपने घर के आस-पास को साफ-सुथरा रखते हैं और दिन में एक बार भोजन कर महापर्व छठ की शुरुवात करते हैं। खाना किसी भी पीतल और मिट्टी के बर्तनों में बना होना चाहिए और चूल्हे में आम की लकड़ी की मदद से बना होना चाहिए।

- **पंचमी**– दूसरा दिन (खरना), इस दिन भक्त पूरा दिन उपवास करते हैं और शाम को सूर्यास्त के बाद ही अपना उपवास तोड़ते हैं। वे पूजा में रसिआव, खीर, पूरी और फल चढाते हैं। भोजन करने के बाद वे अगले 36 घंटे के लिए बिना पानी पिए उपवास रखते हैं।
 - **षष्ठी** – तीसरा दिन (संध्या अर्घ्य), इस दिन यानी की छठ का दिन होता है। इस दिन शाम को नदी के घाट पर सभी भक्त संझिया अर्घ्य या संध्या अर्घ्य भगवान् को चढाते हैं। इसके बाद वे छठवर्तियाँ हल्दी के रंग का साड़ी पहनते हैं और परिवार के साब लोग मिल कर कोसी की रस्म मनाते हैं जिसमें वे पञ्च गन्ने की छड़ी को अपने दीयों के चरों ओर रखते हैं। पांच गन्ने के छड़ी पंचतत्व (पृथ्वी, पानी, अग्नि, वायु और अंतरिक्ष) का रूप माना जाता है।
- सप्तमी**– चौथा दिन उषा अर्घ्य, परना दिन, इस दिन अभी भक्त अपने परिवार और दोस्तों के संग गंगा / नदी के किनारे बिहनिया अर्घ्य प्रदान करते हैं। उसके बाद वे अपना ब्रत तोड़ते हैं और छठ प्रसाद ग्रहण करते हैं।

आप सभी सुखी, स्वस्थ और निरोगी हो ऐसी छठ मैया से कामना करता हूँ ।

जय छठ मैया